फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नाचे मन मयुर

" घर आ कर एक मोर हम से पाँच कदम पर बेझिझक नाचता है। हमारी हथेली से मोर दाने चुग लेता है। हमारा मन आनन्द से भर जाता है।"

नई सीरीज नम्बर 168 जून 2002

बातें ... ज्यादा बातें ... लेकिन कौनसी बातें ? (4)

✱ काट- कूट- पीट- पुचकार कर बच्चों को मण्डी की आवश्यकताओं के मुताबिक ढालने में सहायक होना विद्यालय- रूपी संस्था का आज ध्येय है। ✱ विद्यालय फैक्ट्री- पद्वति के अनुसार ढल गये हैं। स्कूल फैक्ट्री है और इसमें बच्चे कच्चा माल , अध्यापक मशीन ऑपरेटर तथा इमारत- पुस्तकें- अन्य कर्मचारी सहायक सामग्री हैं। ✱ शिक्षा के बाद तैयार माल के रूप में जो नौजवान बिक नहीं पाते उन्हें बेरोजगार- बेकार कहते हैं और जिनके मण्डी में अच्छे भाव लग जाते हैं उनकी वाह- वाह होती है।

बच्चों को मण्डी में बिकने के लिये तैयार करने के वास्ते हम बच्चों को स्कूल भेजते हैं।

"बच्चों की जिन्दगी बनाना" एक ब्रह्मसूत्र है। " जिन्दगी बनाने" के लिये बच्चों की तथा माता- पिता द्वारा स्वयं अपनी दुर्गत करने में आमतौर पर कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी जाती। जो अध्यापक " बच्चों की जिन्दगी बनाने" को गम्भीरता से लेते हैं वे कई बार बच्चों की दुर्गत करने में माता- पिता से भी बाजी मार ले जाते हैं।

जानते हैं , मन्त्र माफिक दोहरा देते हैं कि कुल्हाड़ी का घाव भर जाता है पर कटु वचन का घाव सदा हरा रहता है। लेकिन.... लेकिन बच्चों के खिलाफ व्यापक शारिरिक हिंसा से भी हजारों गुणा अधिक शाब्दिक हिंसा का ताण्डव जारी है। जहर बुझे शब्द- बाणों से बच्चों के मन- मस्तिष्क को छलनी करने में आमतौर पर रत्ती- भर परहेज नहीं किया जाता क्योंकि "बच्चों की जिन्दगी बनाने" का कवच जो हम धारण किये रहते हैं।

लगभग हर बड़े की ही तरह लगभग प्रत्येक बच्चा-बच्ची प्रतिदिन सैंकड़ों बार मरता-मरती है। यह खबर नहीं है।

खबरें भी देख लीजिये : जापान में बढती सँख्या में बच्चे आत्महत्यायें कर रहे हैं ; अमरीका में विद्यालयों के अन्दर बच्चों द्वारा सामुहिक हत्यायें करने की घटनायें बढ रही हैं ; बच्चों के मन- मस्तिष्क के " सुधार" के लिये दवाओं तथा मनोचिकित्सकों का प्रसार हो रहा है।

ऐसे में जिन्दगी बनाने , सफल जीवन के प्रचलित अर्थों को निगलने- दोहराने की बजाय इन पर आलोचनात्मक ढँग से व्यापक चर्चायें जरूरी लगती हैं।

कुफल है सफलता

● अपने इर्द- गिर्द वालों से इक्कीस होने को सफलता मानना बहुत व्यापक होने के संग- संग दैनिक जीवन की सामान्य गतिविधियों तक पसर गया है। बहन से , भाई से , पड़ोसी से , सहकर्मी से , सहपाठी से किस- किस बात में इक्कीस होने के लिये क्या- क्या प्रयास हम सब की दिनचर्या के अंग बन गये हैं : मकान का गेट- दरवाजा ; कपड़े की- जूते की कीमत ; लड़के का कद ; लड़की का रँग ; जान- पहचान वाले की हस्ती ; कक्षा में लड़की के नम्बर ; जन्मदिन पार्टी में खर्चा ; दारू पीने की क्षमता ; तम्बू- रौशनी- बाजे पर खर्च; औकात में ; ज्ञान में- बात में- पहुँच में ; दामाद के गुण ; .....अपने इर्द- गिर्द वालों से इक्कीस होने के लिये छिछले- दर- छिछले स्तर में उतरते जाने को ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में व्यक्ति के अधिकाधिक गौण होते जाने की अभिव्यक्ति के तौर पर ले सकते हैं। ऊँच- नीच वाली वर्तमान व्यवस्था में अब व्यक्ति के होने- नहीं होने के बराबर- से हो जाने ने अपने इर्द- गिर्द वालों से इक्कीस होने को मनोरोग की स्थिति में ला दिया है , सामाजिक मनोरोग।

● ऊँच- नीच की सीढी के डँके चढना वास्तव में कम होता है , बहुत- ही कम होता है पर इसके सपने बहुत व्यापक हैं। जो डँके चढ जाते हैं उनके सफलता के लिये झूठे- सच्चे प्रयास निचले तबकों के लिये किस्से बन जाते हैं। सिर- माथों के पिरामिड पर ऊपर चढने को वास्तविक सफलता कहने का भी प्रचलन है।

● ऊँच- नीच की सीढी के ऊपर वाले हिस्से में अपने को टिकाये रखने को भी सफलता कहा जाता है। नीचे वालों द्वारा लगातार मारे जाते हाथ- पैरों से अस्थिर होते और ऊपर चढने के लिये होती मारा- मारी किन्हीं को भी अधिक समय तक ऊँचे टिके नहीं रहने देते।

अपने इर्द- गिर्द वालों से इक्कीस होना- रहना हर समय टँगड़ी का डर लिये होता है। तनाव , चौकस- चौकन्नापन , दिखावटीपन इक्कीस होने के सिक्के का दूसरा पहलू है। और, अपने इर्द- गिर्द वालों से इक्कीस होने में सफलता देखना अपने आस- पास वालों से तालमेलों में बाधक होता है। इक्कीस होने के प्रयास सम्बन्ध सहज नहीं रहने देते।

ऊँच- नीच की सीढी चढने के प्रयास तन- मन को अत्याधिक तानना लिये हैं। अपने ताबेदारी अखरती है और दूसरों पर ताबेदारी लादने के प्रयास करने पड़ते हैं जो कि व्यक्तित्व को छिन्न- भिन्न करते हैं। जोड़- तोड़ , तिकड़मबाजी , चापलूसी , झूठ- फरेब सामान्य क्रियायें बन जाती हैं। वास्तविक भाव को छिपानो, छवि को ओढे रखना ऊँच- नीच की सीढी चढने के अनिवार्य अंग हैं। जितना ऊपर चढते जाते हैं उतना ही अधिक सामाजिक समस्याओं के निजी समाधानों के प्रयास करने को अभिशप्त होते हैं। आज से 2300 वर्ष पूर्व सुरक्षा वास्ते सम्राट चन्द्रगुप्त हर रात कमरा बदल कर सोने को मजबूर था , अभिशप्त था।

सफलता के लिये प्रयास बाँधते- बीन्धते हैं। सफलता के लिये प्रयास तन- मन को छलनी करते हैं। मनुष्यों के बीच सम्बन्धों को सफलता के लिये प्रयास लहुलुहान करते हैं। और , आज सफलता की प्राप्ति पर उपलब्ध क्या है ? सम्राट चन्द्रगुप्त के शक- शंका- कुटिलता- क्रूरता से सिमटे- सिकुड़े- संकीर्ण जीवन से भी बदतर जीवन।

सफलता कुफल है के दृष्टिगत ऊँच-नीच की सीढी चढना स्वयं में समस्या है। सिर-माथों पर बैठना खुद में प्रोब्लम है। नियन्त्रण-प्रबन्धन को समस्याओं के स्रोत के रूप में चिन्हित करना नई समाज रचनाओं के लिये प्रस्थान-बिन्दू है।

लौटते हैं विद्यालय पर।

अपहरण किसका ?

शिक्षा , विद्यालय और शिक्षक- गुरू के प्रति संस्कार- किस्से- कहानियाँ ऐसे भाव उभारते हैं कि वर्तमान में इनसे रूबरू होने पर अक्सर

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून हैं – ●साप्ताहिक छुट्टी के बाद हरियाणा में हैल्पर को इस समय महीने की कम से कम तनखा 2133 रुपये 16 पैसे , अर्ध- कुशल (क) को 2243 रुपये 16 पैसे , अर्ध- कुशल (ख) को 2393 रुपये 16 पैसे , उच्च कुशल मजदूर को 2693 रुपये 16 पैसे कम से कम ; ●जहाँ एक हजार से कम मजदूर हैं वहाँ वेतन 7 तारीख से पहले और जिस कम्पनी में हजार से ज्यादा हैं वहाँ 10 तारीख से पहले ; ●स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर , आठ महीने लगातार काम करने पर परमानेन्ट ; ●ओवर टाइम समेत एक हफ्ते में 60 घण्टों से ज्यादा काम नहीं लेना ,तीन महीनों में 75 घण्टों से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं , ओवर टाइम के लिये पेमेन्ट डबल रेट से ; ●फैक्ट्री शुरू होने के पहले दिन से प्रोविडेन्ट फण्ड , मजदूर के वेतन (बेसिक व डी.ए.) से 10 प्रतिशत काटना और 10 प्रतिशत कम्पनी ने देना , हर महीने 15 तारीख से पहले यह 20 प्रतिशत राशि मजदूर के भविष्य निधि खाते में जमा करना ; ●फैक्ट्री में एक घण्टे की ड्युटी पर भी ई.एस.आई. ; ●कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को भी 20 दिन पर एक दिन की अर्न्ड छुट्टी तथा त्यौहारी छुट्टियाँ; ●परमानेन्ट- कैजुअल- ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को एक जैसे काम के लिये समान , बराबर वेतन ;● ....

युवा मजदूर : " 60 रुपये दिहाड़ी में एस्कोर्ट्स रेलवे डिविज़न में हमें ठेकेदार के जरिये रखा है। कोई छुट्टी नहीं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं। महीने में 12- 14 दिन काम।"

सुपर अलॉय कास्ट वरकर : " प्लॉट 62 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में साल- भर पहले बनाई नई मशीन शॉप में आपरेटरों को 1800 रुपये महीना देते हैं – ई.एस.आई. कार्ड नहीं , प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं।"

विंग्स आटो मजदूर : " 16/2 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 28 परमानेन्ट , 150 कैजुअल और 130 ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर काम करते हैं। कैजुअलों में किसी- किसी की ई.एस. आई. और प्रोविडेन्ट फण्ड हैं , ठेकेदारों के जरिये रखों में किसी के भी नहीं।"

ट्राइटोन इंजिनियरिंग वरकर : " हर रोज जबरन 4 घण्टे ओवरटाइम काम करवाते हैं जिसकी पेमेन्ट भी सिंगल रेट से देते हैं। हम 28 मजदूरों में से 20 को ई.एस.आई. कार्ड नहीं , पी. एफ. नहीं। तीन- तीन महीनों तक तनखायें नहीं देते।"

ब्रॉन लेबोरेट्री मजदूर : " इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे गये वरकरों को अप्रैल का वेतन आज 20 मई तक नहीं दिया है।"

ओटो इग्निशन वरकर : " प्लॉट 6 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में ओवर टाइम काम की पेमेन्ट हमारी बेसिक व डी.ए. के आधार पर करने की बजाय हरियाणा सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन के आधार पर करते हैं। इस पेमेन्ट को कहते डबल रेट से हैं पर असल में है सिंगल रेट।"

कल्पना फोरजिंग मजदूर : " प्लॉट 35 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। फैक्ट्री के अन्दर क्वाटरों में रखे वरकरों से हर रोज 12 घण्टे काम करवाते हैं और महीने के तीसों दिन 12 घण्टे काम के बदले 1500 रुपये देते हैं।"

न्यू एलनबरी वरकर : " अप्रैल का वेतन आज 17 मई तक नहीं दिया है।"

जयको स्टील फासनर मजदूर : "मजबूरियाँ बढती जा रही हैं और कम्पनियाँ इनका फायदा उठाने में लगी हैं। जयको में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर को 1600 रुपये महीना देते थे जिसे घटा कर 1400 रुपये किया और अब 1000- 1200 रुपये महीना ही देते हैं।"

नूकेम मशीन टूल्स वरकर : " कम्पनी ने दो साल से जीना हराम कर रखा है। तीन- चार महीनों में एक तनखा दे कर कम्पनी ने हमारी दस महीनों की तनखायें नहीं दी हैं।"

विक्टोरा टूल्स मजदूर : " चार ठेकेदारों के जरिये कम्पनी ने हम 150 वरकरों को बरसों से रखा हुआ है। हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं , प्रोविडेन्ट फण्ड भी नहीं। महीने की तनखा हमें 1200- 1400 रुपये देते हैं।"

अमेटीप मशीन टूल्स वरकर : "फरवरी, मार्च और अप्रैल की तनखायें आज 17 मई तक हमें नहीं दी हैं।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : " एस्कोर्ट्स रेलवे इक्विपमेन्ट डिविजन रेलवे को जो ब्रेक बेचती है उनकी दो वर्ष की गारन्टी देती है और हम तीन वरकर तुगलकाबाद रेलवे स्टेशन पर खराब हो जाने वाले ब्रेकों के नुक्स ठीक करते हैं। महीने के तीसों दिन हमें 12 घण्टे प्रतिदिन काम करना पड़ता है – साप्ताहिक छुट्टी नहीं। बारह घण्टे काम की दिहाड़ी 125 रुपये बताते हैं लेकिन इन 125 में से 35 रुपये ई.एस.आई. और पी.एफ. के नाम से काट लेते हैं। महीने में 1050 रुपये ई.एस. आई.- पी.एफ. ! हमें ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं। हमें ठेकेदार के वरकर बताते हैं और हम तीन में से एक को ठेकेदार कह देते हैं।"

सूर्य किरण वरकर : " सैक्टर- 24 स्थित इस फैक्ट्री में सैक्टर- 25 वाले एस.पी.एल. प्लान्ट के मजदूरों को ला रहे हैं। ढर्रा एस.पी. एल. वाला ही है। हर रोज 12- 14 घण्टे काम करवाते हैं। आठ घण्टे की महीने की तनखा 1200 रुपये देते हैं। ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से देते हैं और वह भी 1200 के हिसाब से। ओवर टाइम के घण्टों में गड़बड़ी कर महीने में सौ- दो सौ अलग से खा जाते हैं।"

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं ; हजारों नट- बोल्ट होते हैं ; नालियाँ- सीवर होते हैं ; कई- कई ऑपरेशन होते हैं ; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं : ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें ; ✱ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो ; ✱ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें ; ✱ बिजली कभी कड़के , कभी दमके , कभी आँख- मिचौनी करने मक्का- मदीना चली जाये ; ✱ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के , शान्त मन से , ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

मन्थन.... (पेज तीन का शेष)

" हम ने श्रम विभाग में शिकायत की। तारीखों पर **हैदराबाद इन्डस्ट्रीज** मैनेजमेन्ट आई ही नहीं। हम ने मुख्यमन्त्री- प्रधानमन्त्री- राष्ट्रपति को शिकायतें भेजी। ऐसी एक शिकायत पर श्रम विभाग में फिर तारीखें पड़ी। इस बार उपस्थित हो कर पहले तो कम्पनी ने हमें फैक्ट्री में काम करने वाले वरकर मानने से इनकार कर दिया और सबूत पेश करने पर कहा कि हाँ तीन महीने किया.... कोई नतीजा नहीं निकला। श्रम अधिकारी ने हमें डिमाण्ड नोटिस देने को कहा और फिर उस पर तारीखें पड़ी। नतीजा पहले वाला। केस चण्डीगढ भेजा जहाँ से कछुआ चाल मामला यहाँ लेबर कोर्ट में पहुँच गया है। जून 1996 में निकाले हम 18 में से 6 ही अब केस लड़ रहे हैं। निकाले जाने के 6 साल बाद जनवरी 2002 में लेबर कोर्ट में पहली तारीख पड़ी। लेबर कोर्ट जा कर पता चला कि जज को फैसला देने में 4- 5 साल तो लगेंगे ही।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

मन्थन की एक झलक

टालब्रोस मजदूर : "ग्रुप के सबसे पुराने प्लान्ट , मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ठेकेदारों को घुसाये जा रही है। फैक्ट्री में कैजुअल और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की सँख्या कम्पनी तेजी से बढा रही है। हम पुराने परमानेन्ट वरकर अब ऐसे माहौल में नौकरी नहीं कर पायेंगे।"

रेलवे वरकर : " 11 साल से लगातार रेलवे में काम कर रहे हैं। रेलवे ने स्वयं नहीं बल्कि ठेकेदार के जरिये हमें रखा है। चाहें वहाँ हमें लगा देते हैं – कभी रेल लाइनों पर तो कभी रोड़ी पर। हर रोज 12 घण्टे और महीने के तीसों दिन काम करना पड़ता है। बीमार होने पर भी छुट्टी के लिये हजार बातें सुननी पड़ती हैं। ई.एस.आई. और पी. एफ. के दोनों हिस्से हम से लिये जाते हैं। तीसों दिन 12 घण्टे काम करने पर जो 3400 रुपये बताते हैं उनमें से 700 रुपये ई.एस.आई.- पी. एफ. और टैक्स के नाम से काट लेते हैं। गर्मी- बरसात- सर्दी खुले में और मौत के साये में काम करते हैं। और मत पूछिये !"

एक ठेकेदार : " बहुत- से छोटे ठेकेदार स्वयं कुशल मजदूर रहे होते हैं। फैक्ट्रियों में ठेकेदारों से अफसर कमीशन माँगते हैं। कमीशन की मात्रा बताते समय मैनेजर लोग बोलते हैं कि 1200 रुपये महीना पर इतने मजदूरों से काम हो जायेगा और इतनी बचत होगी जिसमें से इतना हिस्सा दो। साहब लोग मजदूर की तनखा 1200 रुपये लगाते हैं और 'इतने में कोई गुजारा कैसे करेगा' जैसी बात सुनने को तैयार नहीं होते।"

साधु फोरजिंग वरकर : " वार्षिक वेतन वृद्धि ज्यादा देते हैं कह कर हमें डी.ए. नहीं देते थे। इधर वार्षिक वेतन वृद्धि पहले से एक तिहाई कर दी है , वर्क लोड बढा दिया है और डी.ए. पहले की तरह नदारद है। हमारे अगल- बगल में 75 कैजुअल और ठेकेदारों के जरिसे 50 वरकर कम्पनी ने रखे हैं।"

ईस्ट इण्डिया कॉटन मिल मजदूर : "फैक्ट्री बन्द पड़ी है 6 साल से। कम्पनी को सरकार ने बीमार घोषित कर दिया है। बीमार को स्वस्थ करने की खिचड़ी बी.आई.एफ.आर. में पक रही है। मजदूरों से कुर्बानी लेना बीमार कम्पनियों को स्वस्थ करने की स्कीमों का मुख्य हिस्सा होता है। मैनेजमेन्ट जैसी कुर्बानी माँग रही है उस पर यूनियन प्रधान से पटरी नहीं बैठी तो मैनेजमेन्ट ने बी.आई.एफ.आर. के समक्ष दूसरा यूनियन प्रधान पेश कर दिया।"

एस्कोर्ट्स वरकर : " यह छुट्टियाँ मजदूरों को अप्रत्यक्ष ढँग से कमजोर करने की साजिश का हिस्सा हैं। पहले 4 दिन , फिर 4 दिन , फिर 15 दिन और सुनने में आया है कि जून में कम्पनी फिर छुट्टियाँ करेगी। यह हमें डराने के लिये है: 'घर बैठे तनखा दे रहे हैं – आखिर कब तक ?' डर- चिन्ता से डगमगाने पर पकड़ने के लिये वी. आर.एस. का जाल बिछा ही रखा है।

"अगर मैं सोचता हूँ कि ज्यादा पैसे मिल रहे हैं चलो ऐसे माहौल में नौकरी छोड़ दूँ तो मैं गलत हूँ क्योंकि कम्पनी चाहती ही है कि मजदूर ऐसे सोचें। इन चार वर्षों में जिन्होंने वी.आर.एस. के फेर में इस्तीफे दिये हैं उनका बुरा हाल है , सारे दिन पागलों की तरह घूमते हैं।

"सुपरवाइजरों और मैनेजरों से उनकी 12- 12 छुट्टियाँ भरवा ली। इस्तीफों के लिये दबाव के वास्ते सुपरवाइजरों और मैनेजरों को कई तरह की धमकियाँ दी जा रही हैं। चर्चा है कि कम्पनी एस्कोर्ट्स एग्री मशीनरी ग्रुप से ही 180 सुपरवाइजरों और मैनेजरों को निकालना चाहती है। पच्चीस- तीस साल सेवा करने का यह फल है। कइयों ने तो कम्पनी की बहुत चिलम भरी थी। मैनेजमेन्ट भला किसी की सगी है ?

" मैं कारपोरेट आफिस में काम करता हूँ। एक बार फिर मजदूरों , सुपरवाइजरों और मैनेजरों को नौकरी से निकालने के लिये बड़े साहब लोग मीटिंग पर मीटिंग कर रहे हैं। इन चार वर्षों में यह दृश्य कई बार देख चुका हूँ। हर बार लगता है कि इस बार निकाल देंगे पर लोग हैं कि कम्पनी के काबू में नहीं आते।"

हैदराबाद इन्डस्ट्रीज मजदूर : " स्थाई काम है पर उसे करने के लिये वरकरों को कम्पनी ठेकेदारों के जरिये रखती है। फैक्ट्री में बीस- बीस साल से लगातार काम करते ऐसे मजदूर हैं। कई बार ठेकेदार बदल जाते हैं पर वरकर वही रहते हैं। असल में पेमेन्ट कम्पनी खुद करती है और काम भी कम्पनी स्वयं लेती है – ठेकेदार तो नाम के हैं। कई बार पुराने वरकर को ही कम्पनी ठेकेदार बना देती है और इस सम्बन्ध में कागजी- कानूनी खानापूर्ति कम्पनी खुद करती है।

"फैक्ट्री में छतों की चद्दरें बदलना एक खतरनाक काम है। इस काम को करते मजदूरों को कम्पनी का डॉक्टर सर्टिफिकेट देता है और बीमा भी कम्पनी अलग से करवाती है। एक पुराने मजदूर को बीस वर्ष के लिये ठेका दे कर नवभारत कान्ट्रैक्टर के नाम से चण्डीगढ़ में रजिस्ट्रेशन कम्पनी ने खुद करवाया। हमें फैक्ट्री में छतों की चद्दरें बदलते 4 साल हो गये थे कि अचानक जून 96 में यह कह कर हमें नौकरी से निकाल दिया कि ठेका समाप्त कर दिया है।

" दरअसल रिश्वत के लफड़े में ठेका खत्म किया गया था। मामले में कम्पनी के सिविल इंजिनियर को निकाला गया , क्वालिटी कन्ट्रोलर से इस्तीफा लिया गया और वर्क्स इन्सपैक्टर का विभाग बदला गया। लेन- देन की इस मारामारी में हम 18 मजदूरों को नौकरी से निकालने पर हम ने एतराज किया। मैनेजमेन्ट ने हमारी नहीं सुनी।

(बाकी पेज दो पर)

... लेकिन कौनसी बातें

(पेज एक का शेष)

कहा- सुना जाता है कि शिक्षा अब व्यापार बन गई है ; विद्यालय धन्धा करने के लिये लाइसेन्सशुदा अहाते हो गये हैं ; गुरू के स्थान पर अध्यापकों के रूप में नौकर दे दिये गये हैं। व्यथा शब्दों में फूट पड़ती है : "आज की व्यवस्था में शिक्षा का अपहरण कर लिया गया है।"

जबकि , शिक्षा-विद्यालय-गुरू का आगमन ही ऊँच-नीच वाली व्यवस्थाओं के आगमन से जुड़ा है। आश्रम में स्वामी-पुत्रों को ऋषि-गुरू शिक्षा देते थे – वह शिक्षा दासों को नियन्त्रण में रखना और स्वामियों में इक्कीस होना सिखाती थी। निषेध का उदाहरण एकलव्य का अँगूठा हैं। वास्तव में विद्यालय , गुरू और उनकी शिक्षा ने समुदाय में पीढियों के परस्पर सहज रिश्तों का अपहरण किया था। शिक्षा और विद्यालय सारतः समुदाय-विरोधी हैं तथा ऊँच-नीच के पोषक हैं।

और , यह तो मण्डी की आवश्यकता के अनुसार अक्षर- ज्ञान को व्यापक बनाने की अनिवार्यता रही है कि बहुत बड़ी सँख्या में विद्यालय खोले गये हैं। ऋषियों- गुरूओं का रूपान्तरण विशेषज्ञों- जाने माने प्रोफेसरों में हुआ है और यह लोग ऊँच- नीच को बनाये रखने के लिए तर्कों- सिद्धान्तों की नित नई रचना करते हैं। हाँ , बहुत बड़ी सँख्या में अध्यापक एजुकेशनल वरकर बन गये हैं , शिक्षा- क्षेत्र के मजदूर बन गये हैं। यह कोई अफसोस करने की बात नहीं है बल्कि यह तो समुदाय–विरोधी शिक्षा- विद्यालय के पर्दे उघाड़ने की क्षमता लिये बड़े समूह के आगमन का सुसमाचार है।

"मजदूर कामचोर हैं" , "सरकारी कर्मचारी काम नहीं करते" , "अध्यापक पढाते नहीं" को विलाप- रूप के पार चल कर आइये देखें। ऐसा करने पर वर्तमान ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था का खोखलापन साफ- साफ नजर आयेगा। इस सकारात्मक बिन्दू से शिक्षा- विद्यालय- शिक्षक- छात्र वाली चर्चा को आगे बढाने का प्रयास करेंगे। (जारी)

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✱ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ✱ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ✱ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

कुछ फुरसत में

★ हिन्दुस्तान सिरिंज मजदूर : " जहाँ कहीं तीन शिफ्ट होती हैं वहाँ दिन 24 घण्टे का होने के कारण 8-8 घण्टे की शिफ्ट होती हैं। लेकिन हिन्दुस्तान सिरिंज में **तीन शिफ्ट होते हुये भी हर वरकर की साढे आठ घण्टे ड्युटी कर कम्पनी ने दिन ही साढे पच्चीस घण्टों का कर दिया है !**

"परिवार में लड़के-लड़की में भेदभाव कर लड़की को अधिक दब्बू व हीन भाव वाली बनाते हैं। घर-परिवार द्वारा लड़कियों में पैदा किये जाते अतिरिक्त दब्बूपन व हीन भावना को भुनाने में हिन्दुस्तान सिरिंज शातिर है। **कम्पनी ने इन दो वर्षो में ही , महिला मजदूरों से शुरू कर सब मजदूरों पर काम का बोझ चार सौ प्रतिशत बढा दिया है!**

"इन्डस्ट्रीयल एरिया में तो फैक्ट्री बड़ी नहीं है पर सैक्टर-25 में प्लॉट 178 स्थित फैक्ट्री में 5 प्लान्ट हैं और बिल्डिंगें तिमंजिली हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। प्लान्टों में भी कैन्टीन नहीं है। प्लान्टों में विभाग अनुसार लन्च रूम हैं। और , **मशीनें बन्द नहीं होनी चाहियें का ऐसा चक्कर चला रखा है कि किसी वरकर को ड्युटी करते दो घण्टे होने पर ही लन्च करने को कह देते हैं तो किसी का नम्बर 6 घण्टे खटते हो जाते हैं तब आता है।** हाजमा बिगाड़ने का अचूक नुस्खा है: हिन्दुस्तान सिरिंज में नौकरी करो।

" कैन्टीन नहीं बना कर भोजन का प्रबन्ध तो कम्पनी ने किया ही नहीं है, **एक कप चाय तक का फैक्ट्री में प्रबन्ध नहीं है।** बाहर से चाय मँगाने नहीं देते। अपने लन्च समय में भी गेट पर दर्ज कर मुश्किल से बाहर जाने देते हैं। ड्युटी के बाद तलाशी में हमारा आधा घण्टा और कम्पनी खा जाती है।

"सुनते जाइये। **एड्स बीमारी लगता है सिरिंज जैसी कम्पनियों के लिये है। फैक्ट्री से प्रतिदिन 45 लाख डिस्पोजेबल सिरिंज बाहर जाते हैं – इस्तेमाल करो और फेंको, एड्स का खतरा है !** हर वरकर का काम के बोझ से दम घुट रहा है। फैक्ट्री में वरकर बेहोश हो जाते हैं। बीमार पड़ कर लोग नौकरी छोड़ते रहते हैं।

" सिरिंज , ऑपरेशन वाली ब्लेडों और घाव सीलने वाले धागों को कीटाणु-रहित करने के लिये गैसें भी इस्तेमाल करते हैं। **गैसें लीक होती हैं और हमारी आँखें लाल हो जाती हैं, कुछ समय के लिये दीखना तक बन्द हो जाता है।** सूइयों,ब्लेडों, धागों से छलनी हो कर प्रतिदिन निकलता मजदूरों का रक्त अच्छा-खासा ब्लड बैंक चला सकता है।

"सुपरवाइजरों को रोज 10 घण्टे काम करना पड़ता है। ऊपर जवाब देने के चक्कर में वे बहुत तनाव में रहते हैं। वरकरों से बात-बात में उलझते हैं , गालियाँ देना उनके लिये सामान्य बात है और गला तक पकड़ लेते हैं। पेशाब करने जाने तक पर सुपरवाइजर खूब रोक-टोक करते हैं।

"फैक्ट्री में भूतहा वर्दी पहनना अनिवार्य है। इक्के-दुक्के विभाग की वर्दियाँ रोज धुलती हैं पर अधिकतर महीनों नहीं धुलती। मजदूर जल्दी-जल्दी नौकरी छोड़ कर जाते रहते हैं लेकिन टोपियों की जूँयें एक वरकर से दूसरे के सिर को खुजलाती हैं। गन्दगी से भरी लैट्रीनें भयंकर बदबू मारती हैं।

"फैक्ट्री में बीमार पड़ जाने पर भी कम्पनी आधे दिन की छुट्टी नहीं देती। घर से आओ ही नहीं इसे रोकने के लिये महीने में पूरी हाजरी पर 165 रुपये का चुग्गा है।

"ताजा-ताजा दसवीं-बारहवीं किये लड़के-लड़कियों को कम्पनी भर्ती करती है क्योंकि युवा रक्त के ही ऐसी हालात में कुछ दिन टिकने की सम्भावना होती है। यह उन कम्पनियों में है जहाँ हर समय 'आवश्यकता है' का बोर्ड लगा रहता है। नौकरियाँ मिलनी बहुत-ही मुश्किल होने और नौकरी करने की अत्यधिक मजबूरी के बावजूद वरकर जल्दी–जल्दी नौकरी छोड़ जाते हैं।"

★ सेन्डेन विकास वरकर : " प्लॉट 65 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में कारों के एयरकंन्डीशनर बनते हैं और मजदूरों के बीच कम्पनी बहुत भेदभाव करती है। फैक्ट्री में 75 परमानेन्ट , दो ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकर और 40-50 ट्रेनी हैं। एक ही काम करते मजदूरों की तनखाओं के बीच तो भारी अन्तर है ही , कैन्टीन के मामले में भी सेन्डेन विकास कम्पनी दुभान्त करती है। **परमानेन्ट मजदूरों को कैन्टीन में एक रुपये में भोजन दिया जाता है जबकि ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों से उसी खाने के दस रुपये लेते हैं।** चाय के साथ परमानेन्ट मजदूरों को कुछ खाने को देते हैं और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को सूखी चाय। इन्डो-जापानी कम्पनी है–मैनेजिंग डायरेक्टर भारत सरकार का नागरिक है और ज्वाइन्ट मैनेजिंग डायरेक्टर जापान सरकार का नागरिक है तथा दोनों बड़े साहब रोज फैक्ट्री आते हैं। फैक्ट्री में ओवर टाइम काम करवाया जाता है पर ओवर टाइम काम को कम्पनी कागजों में दिखाती नहीं और पेमेन्ट डबल की बजाय सिंगल रेट से करती है। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को कम्पनी बोनस नहीं देती और 20 दिहाड़ी पर एक छुट्टी वाली अर्न्ड लीव भी नहीं देती। इस वर्ष जनवरी से लागू होने वाले डी.ए. के पैसे दोनों ठेकेदारों ने अप्रैल से दिये। तीन महीनों का एरियर माँगने पर ठेकेदार कहते हैं कि कम्पनी ने दिया ही नहीं।"

विचारणीय

सरकारों , कम्पनियों और इस-उस नेता , अफसर, गुण्डे की शक्ति के किस्सों का निष्कर्ष वाक्य होता है: " वे जो चाहें कर सकते हैं , वे कुछ भी कर सकते हैं।"

मजदूरों, गरीबों, कर्मचारियोंकी असहायता के बखान की मंजिल होती है : " मजदूर कुछ नहीं कर सकते।"

लेकिन व्यवहार में हम "शक्तिशालियों" को "असहायों" की "सहमति" लेने के लिये पापड़ बेलते देखते हैं। जब छँटनी करनी होती है तब कम्पनियाँ ऐसे ही किसी दिन फैक्ट्री गेट पर फुटकर व वर्दीधारी गुण्डे खड़े कर मजदूरों को नौकरी से नहीं निकाल देती। फैक्ट्री बन्द होने का डर , कान पकड़ कर सूखे ही निकाल देगी का हव्वा और साल पीछे 32-45-70-90-105 दिन के वेतन का लालच दे कर कम्पनियाँ मजदूरों को "स्वेच्छा" से इस्तीफे देने के लिये "राजी" करने के वास्ते माहौल बनाती हैं। कम्पनियों में इन्सानियत नाम की चीज होती ही नहीं है। तो , बात क्या है ?

बात भैंस की लेते हैं। खूँटे से बँधी भैंस पूरी तरह असहाय नजर आती है। भैंस द्वारा दूध देने से इनकार करने पर होती कुटाई-पिटाई भैंस की पूर्ण लाचारी दिखाती लगती है। लेकिन.... लेकिन कूट-पीट से दूध की एक धार नहीं मिलती और भैंस को राजी करने के लिये , भैंस की "सहमति" लेने के वास्ते सान्नी पर चून बुरकना पड़ता है! वैसे , बिना घास डाले भैंस दूह सकते अथवा सूखे भूसे-थोड़े चारे से ढेर-सारा दूध प्राप्त कर सकते तो..... बात ले आती है कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे जाते वरकरों पर। कैजुअल व ठेकेदारी प्रथाओं का प्रसार वास्तव में वर्तमान व्यवस्था की जड़ों पर प्रहार है। अपनी ही जड़ों पर चोट मारना साहबों की " मजबूरी" है। कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे जाते वरकरों का दुख-दर्द-गुस्सा-भ्रमों से पिण्ड छूटना वर्तमान व्यवस्था को लीलने में लगे हैं।

लौटते हैं फैक्ट्री-दफ्तर। **यह सही है कि हर कम्पनी में अपने किसी भी वरकर का जब चाहे गेट रोक देने की शक्ति है लेकिन किसी भी कम्पनी में जो अन्दर रह जायेंगे उनके वार झेलने की क्षमता नहीं है। कोई कम्पनी बिना वरकरों के नहीं चल सकती और कोई कम्पनी बिना मजदूरों की "सहमति" के नहीं चल सकती। इसलिये जो शक्तिशाली "सहमति" प्राप्त नहीं करते , नहीं कर पाते वे सिफर-शून्य हो जाते हैं। हमें अपने सहमति देने से इनकार के महत्व को पहचानने की आवश्यकता है।**

चलते-चलते **एस्कोर्ट्स** मजदूरों को जिक्र कर दें कि **टेकमसेह** में विभाग बन्द करने , छँटनी करने की सरकार द्वारा अनुमति दे दिये जाने के बावजूद तालाबन्दी-हड़ताल व वी.आर.एस. द्वारा मजदूरों को "राजी" करने के पापड़ मैनेजमेन्ट को बेलने पड़े। और , जिन मजदूरों ने इस्तीफे लिखने से इनकार कर दिया वे आज भी नौकरी कर रहे हैं , टेकमसेह के हैदराबाद प्लान्ट में।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।